<u>जैन दर्शन- स्यादवाद</u>

(The Theory of Relativity of Knowledge)

By- Dr. Arun Kumar Sinha
Asso. Professor, Philosophy Department
Raja Singh College, Siwan
(For Part- 1 Hons./Subs. Students)

अनेकांतवाद का सिद्धांत स्यादवाद के लिए पृष्ठभूमि के रूप में है। जैन दार्शनिक ऐसा मानते हैं कि किसी भी वस्तु के अनंत धर्म अर्थात गुण होते हैं जिस की पूर्ण जानकारी मनुष्य के लिए संभव नहीं है ।मनुष्य किसी भी वस्तु के कुछ ही गुणों को जानने में समर्थ है क्योंकि मनुष्य की ज्ञान की कुछ सीमाएं हैं ।साधारण मनुष्यों का ज्ञान अपूर्ण एवम आंशिक होता है । केवल ज्ञानी ही सारे गुणों को जान सकता है।आंशिक ज्ञान को जैन दर्शन में 'नय' कहा गया है।नय किसी भी वस्तु को समझने का दृष्टिकोण है।

इस तरह किसी भी विषय के संबंध में जो हमारा परामर्श होता है वह सभी ढंग से सत्य नहीं होता उसकी सत्यता उसके नय पर निर्भर करती है अर्थात जिस दृष्टि तथा जिस विचार से किसी विषय का परामर्श होता है उसकी सत्यता उसी दृष्टि तथा उसी विचार पर निर्भर करती है। हमारे मतभेद का कारण यह है कि हम इस सिद्धांत को भूल जाते हैं और अपने विचारों को सर्वदा सत्य मानने लगते हैं।

इसे और अधिक स्पष्ट रूप में समझने के लिए हाथी और अंधों का दृष्टांत जैन दार्शनिकों ने दिया है - हाथी के आकार का ज्ञान प्राप्त करने के उद्देश्य से छः अन्धे हाथी के अंगो का स्पर्श करते हैं और जो अंधा अपने हाथों को हाथी के शरीर के जिस भाग पर रखता है वह उसे ही पूरा हाथी मान लेता है ,जैसे जो अंधा हाथी के पैर को पकड़ता है वह हाथी को खंभे जैसा समझता है, जो हाथी के सूंढ़ को स्पर्श करता है वह हाथी को अजगर जैसा समझने लगता है ,जो हाथी के पूंछ को छूता है वह हाथी को रस्सी जैसा बतलाता है, जो हाथी के पेट को छूता है वह हाथी को दीवार जैसा बतलाता है, जो मस्तक को छूता है वह हाथी को छाती के समान बतलाता है ,जो हाथी के कान को छूता है वह हाथी को पंखे जैसा बतलाता है ,इस तरह प्रत्येक अन्धा सोचता है कि उसी का ज्ञान सही है और अन्य गलत हैं, जबकि सभी अंधों के ज्ञान गलत हैं क्योंकि सबों ने हाथी के एक-एक अंग का ही स्पर्श किया हुआ है। जब अंधों को यह बतलाया जाता है कि प्रत्येक ने हाथी के एक- एक अंग का ही स्पर्श किया है तो उनका मतभेद दूर हो जाता है। दार्शनिकों के बीच भी मतभेद इसलिए होता है कि वे अपने दृष्टिकोण को सही और दूसरे के दृष्टिकोण को मिथ्या बतलाते है । वे किसी विषय

को भिन्न-भिन्न दृष्टियों से आँकते हैं ,दृष्टि में समानता होने पर मतभेद की संभावना नहीं रहती ।

तर्कशास्त्र में परामर्श (Judgement)के दो भेद माने गए हैं -भावात्मक(Affirmative) और निषेधात्मक(Negative) । 'अ ब है'-भावात्मक और 'अ ब नहीं है'निषेधात्मक वाक्य के उदाहरण हैं।जैन इन दोनों उदाहरणों में 'स्यात' शब्द जोड़ देते हैं और तब इसका स्वरूप होता है-स्यात अ ब है और स्यात अ ब नहीं है।इन दोनों को लेकर जैन सात प्रकार के भेद मानते हैं जिसे उन्होंने सप्त-भंगी नय कहा है, जो निम्न है:-

1. स्यात-अस्ति (Some how S is)
2. स्यात नास्ति (Some how S is not)
3. स्यात अस्ति च नास्ति च (Some how S is and also is not)
4. स्यात अव्यक्तव्यं (Some how S is indescribable)
5. स्यात अस्ति च अव्यक्तव्यं च (Some how S is and indescribable)
6. स्यात नास्ति च अव्यक्तव्यं च (Some how S is not and indescribable)
7. स्यात अस्ति च नास्ति च अव्यक्तव्यं च (Some how S is, and is not and is indescribable)

अब इन सात प्रकार के भेद को और अधिक स्पष्ट रूप में एक-एक कर इस प्रकार जाना जा सकता है :-

1. स्यात अस्ति(स्यात है) -यह भावात्मक वाक्य और पहला परामर्श है।इसका उदाहरण है-स्यात घड़ा लाल है तो इसका मतलब होता है कि किसी विशेष देश, काल और प्रसंग में ही घड़ा लाल है।

2. स्यात नास्ति(स्यात नहीं है) -यह नास्तिबोधक परामर्श है।घड़े के सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि स्यात घड़ा इस कोठरी में नहीं है।इसका यह मतलब नहीं है कि कोठरी में कोई घड़ा नहीं है या नहीं रह सकता।यहाँ स्यात घड़ा नहीं का अर्थ है कि जिस घड़े के लिए परामर्श दिया गया है वह घड़ा कोठरी में नहीं है अर्थात एक विशेष रंग रूप का घड़ा विशेष समय में कोठरी में नहीं है।

3. स्यात अस्ति च नास्ति च(स्यात है तथा नहीं भी है) - इस परामर्श के द्वारा किसी वस्तु की उपस्थिति और अनुपस्थिति दोनों का भान होता है।घड़ा कभी लाल हो सकता है तथा कभी दूसरे रंग का भी हो सकता है, जब परिस्थितियां इस तरह की हों तभी इसका प्रयोग किया जा सकता है।

4. स्यात अव्यक्तव्यं(स्यात अव्यक्ताब्या है) -जब किसी परामर्श में परस्पर विरोधी गुणों पर

एक साथ विचार करना हो तब उसका यथार्थ स्वरूप स्यात अव्यक्तव्यं ही होना चाहिए। दार्शनिक दृष्टिकोण से इसका सर्वाधिक महत्व है।इससे यह बोध होता है कि भिन्न-भिन्न दृष्टियों के अनुसार ही किसी वस्तु का क्रमिक वर्णन किया जा सकता है।यह भी की सभी समय में किसी भी प्रश्न का उत्तर अस्तिसूचक या नास्तिसूचक में देना यथोचित नहीं है।जैन दार्शनिक तार्किक विरोध (Contradiction)को एक दोष मानते हैं।

5. स्यात अस्ति च अव्यक्तव्यं च (स्यात है और अव्यक्तव्य भी है) - यह परामर्श पहले और चौथे के जोड़ने से प्राप्त होता है।किसी विशेष दृष्टि से घड़े को लाल कहा जा सकता है परन्तु यदि दृष्टि स्पष्ट न हो तब घड़े के रंग का वर्णन सम्भव नहीं होता।अतः घड़ा लाल है और अव्यक्तव्य भी है।

6. स्यात नास्ति च अव्यक्तव्यं च(स्यात नहीं है और अव्यक्तव्य भी है) - यह दूसरे और चौथे परामर्श को मिलाने पर प्राप्त हो जाता है।किसी विशेष दृष्टिकोण से किसी वस्तु के सम्बन्ध में यह कहा जा सकता है कि वह 'नहीं' है पर यदि दृष्टि स्पष्ट न हो तब कुछ भी नहीं कहा जा सकता है।घड़ा लाल नहीं है और अव्यक्तव्यं भी है।

7. स्यात अस्ति च नास्ति च अव्यक्तव्यं च(स्यात है नहीं है और अव्यक्तव्य भी है) - यह परामर्श तीसरे और चौथे को को जोड़ने पर बना है।इस परामर्श के अनुसार एक दृष्टि से घड़ा लाल है दूसरी दृष्टि से लाल नहीं है और यदि दृष्टि स्पष्ट न हो तो अव्यक्तव्यं है।

कभी-कभी यह भी प्रश्न उत्पन्न होता है कि यह संख्या सात ही क्यों, यह सात से अधिक और कम भी तो हो सकता है।क्या सात पर रुक जाना न्यायसंगत है?यदि अस्ति, नास्ति और अव्यक्तव्यं पर एक साथ विचार किया जाता है तब यह पाया जाता है कि यह सात ही हो सकते हैं इससे न कम और न अधिक।

संदेहवाद(Scepticism)वह सिद्धान्त जो ज्ञान की सम्भावना में संदेह करता है इस दृष्टिकोण से स्यादवाद को संदेहवाद नहीं कहा जा सकता है जैसा कि कुछ लोग कहते हैं।जैन ज्ञान की पूर्ण सम्भावना और सत्यता पर विश्वास करते हैं।जैन का स्यादवाद ज्ञान की सापेक्षता का सिद्धांत है।

जैन के स्यादवाद सिद्धान्त के विरुद्ध कुछ आलोचनाएं भी की गई हैं, जिनमें से निम्नलिखित प्रमुख हैं : -

बेदान्त दर्शन में स्यादवाद के सम्बन्ध में आलोचना करते हुए कहा गया है कि कोई भी सिद्धान्त सिर्फ सम्भावना पर आधारित नहीं हो सकता, यदि सभी वस्तुएँ सम्भव मात्र हैं तब स्यादवाद स्वयं सम्भव मात्र हो जाता है।

कोई वस्तु एक ही समय में है भी और नहीं भी ऐसा कैसे सम्भव हो सकता है, इस तरह का विचार बौद्ध और वेदांती रखते हैं।इनके द्वारा स्यादवाद को पगलों का प्रलाप भी कहा गया है।प्रकाश और अंधकार एक ही स्थान में साथ-साथ नहीं रह सकते।इस तरह स्यादवाद 'विरोधों का समूह' है।

जैन केवल सापेक्ष को ही मानते हैं, वे निरपेक्ष को नहीं मानते।बहुत से विद्वनों का मानना है कि सभी सापेक्ष निरपेक्ष पर आधरित होतेहैं और निरपेक्ष के अभाव में स्यादवाद के सातों परामर्श अलग-अलग हैं जिनमें समन्वय स्थापित करना सम्भव नहीं हो सकता है।